जनवरी–फरवरी 2010

मोरंगे

चरखे पर सूत कातते हुए बच्चे व समुदाय के लोग

किलोल के दौरान चाक पर मिट्टी का काम

लोकगीत अंक

इस बार

लोकगीत

ख्याल नहळा रसिया
लाँगुरिया ढाँचा बण्डा–गीत
लोक–देवताओं के गीत पद

खिड़की

नरसी जी कौ भात

आलेख

पूर्वी राजस्थान में लोकगीत

तथा पखेरू मेरी याद के व
अन्य स्तम्भ

किलोल 2010

मोरंगे वर्ष 1 अंक **7–8**

सम्पादन : प्रभात

सहयोग : भारती, कमलेश,
मीनू मिश्रा, रंजीता

डिज़ाइन : शिव कुमार गाँधी
इस अंक में दंगलों के फोटो मदन मीणा
के सौजन्य से बाकी किलोल 2010 से

प्रूफ : नताशा
वितरण : लोकेश राठौर

प्रबंधन
मनीष पांडेय, सचिव,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र, 3/155, हाउसिंग बोर्ड,
सवाईमाधोपुर, राजस्थान
Email;graminswm@gmail.com
website; graminshiksha.in
ph.no. & fax 07462-233057

'मोरंगे'
का प्रकाशन 'यात्रा फाउंडेशन' आस्ट्रेलिया,
के वित्तीय सहयोग से हो रहा है।

फुटबाल खेलने की तैयारी

किलोल के दौरान कबड्डी खेलते बच्चे

मेरौ चूहा बड़ौ खिलाड़ी

मेरौ चूहा बड़ौ खिलाड़ी
याकौ घर म राज अति भारी
कुर्सी पे ऐसो बैठ्यौ
जाणैं घर कौ राजा या ही
मेरौ चूहा...

मेरे ससुर गये लड़–भिड़ के
मैने चूहा सिखायौ जी भर के
सोते की
सोते की मूँछ कुतर आ
रोवैगो मूँड पकड़ के
मेरौ चूहा...

मेरे जेठ गये लड–भिड़ के
मैने चूहा सिखायौ जी भर के
सोते की
सोते की जेब कुतर आ
रोवैगौ मूँड पकड़ के
मेरौ चूहा...

मेरे देवर गये लड़–भिड़ के
मैने चूहा सिखायौ जी भर के
सोते के
सोते के बाल कुतर आ
रोवैगौ मूँड पकड़ के
मेरौ चूहा...

प्रस्तुति–
मोनिका शर्मा, शिक्षिका, बोदल

बात कहूँ

बात कहूँ बतका कहूँ
बतकौ गयौ चाकरी
लायो बूची बाकरी
भूख लगी आकरी
सेक खायी बाकरी

ईसर छोटौ सौ

छोटौ–छोटौ मटर के मान
ईसर छोटौ सौ।

बागा में जाऊँ तो
ईसर मचल गयौ
म्हाने फूल दिला दै गणगौर
ईसर छोटौ सौ
छोटौ–छोटौ...

हलवाई के जाऊँ
ईसर मचल गयौ
लड्डू–पेळा दिला दै गणगौर
ईसर छोटौ सौ
छोटौ–छोटौ...

बजाजों के जाऊँ
ईसर मचल गयौ
म्हाने कपड़ा दिला दै गणगौर
ईसर छोटौ सौ
छोटौ–छोटौ...

प्रस्तुति–
मोनिका शर्मा, शिक्षिका, बोदल

किलोल में लोकनृत्य प्रस्तुत करते शिक्षक–शिक्षिकाएँ

गोपाल्या रै

गोपाल्या रै
ओढ गूदळी सोजा रै
रगबग–रगबग
हाबू आवै, हाबू आवै रै

माकड़ी का जाड़ा म
तीन ऊँट का बच्च्या
गल्यावळी का घुँसाळा म
तीन शेर का बच्च्या

तीतर कै दो आगै तीतर
तीतर कै दो पाछै तीतर
आवै–जावै रै

गोपाल्या रै
ओढ गूदळी सोजा रै
रगबग–रगबग
हाबू आवै, हाबू आवै रै

प्रस्तुति–
एकराज मीणा, पिस्ता मीणा, 9 साल, इन्द्रधनुष

तेरी मेरी,मेरी तेरी बात

प्यारे बच्चो,

इस बार के किलोल में पता चला कि तुम्हारी लोक–गीतों में कितनी गहरी रुचि है। दो दिन के किलोल में तुम दो दिन और दो रात गाते और नाचते रहे। कहते हैं खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है। तुमसे प्रेरणा पाकर, तुम्हारे शिक्षक भी रंग में आ गए। अब तो उनके पैर भी जमीन पर नहीं टिक रहे थे। तुमने तो देखा ही था कि कुछ शिक्षिकाओं ने अच्छा नाच प्रस्तुत किया। कुछ जब तक नाचती रहीं जब तक कि वे नाचते–नाचते गिर नहीं गईं। कुछ शिक्षक पूरे समय हैलिकोप्टर बने रहे। वे ऐसे नाचते रहे थे मानों उन्हें हवा में उड़ना सीखना है। मजेदार बात यह नहीं है किसे नाचना आ रहा था और किसे नहीं। मजेदार बात यह थी कि सभी में भरपूर उत्साह था। सभी जीवन की ऊर्जा से भरे हुए थे। पर कुछ लोगों की तो नाम लेकर तारीफ करनी ही पड़ेगी। कटार–फरिया स्कूल से आयीं आठ बरस की किरण और पूजा ने लख बिणजारौ गीत पर जो नृत्य प्रस्तुत किया। वह बहुत सुंदर, बहुत कमाल था। यह उन्होंने अपने समुदाय से, अपनी परम्परा से स्वतःस्फूर्त ढंग से सीखा हुआ था।

किरण और पूजा के बाद जगनपुरा से चौथमल, प्रकाश, चेतराम आदि बच्चों और बोदल के बच्चों का भी नाच सुंदर था। और भी कई बच्चे थे जिनका नाम याद रह नहीं पाए। उधर रूपकला का नाच और बद्री का गाना दोनों में से कौन श्रेष्ठ है कहना कठिन है। दोनों में अपनी–अपनी तरह की प्रतिभा है। जगनपुरा से आए दीपक ने पद का एक ही सुरबंदा गाया था और ऐसा असर छोड़ा कि वह आवाज आज भी कानों में वैसी ही मीठी गूँज रही है। पर यह बात समझ में नहीं आयी कि फोर सिंह ने तुम पद गाने वाले बच्चों की नाकों के नीचे मूँछें क्यों बना दी थी ?

किलोल के बाद जब सब अपनी–अपनी बसों से अपने–अपने गाँव लौट रहे थे। पूरे रास्ते बच्चे बस में नाचते और गाते रहे। हालांकि नाचने के लिए कहीं लटकने की जरूरत नहीं है। पर वे बस में लगे पाइप से लटक–लटक कर भी नाच रहे थे। अपने बचपन में पढ़े एक निबंध का शीर्षक याद आ गया–'अहा! बाल्य जीवन भी क्या है ?' जगनपुरा वाली बस में अनूप कह रहा था कि देखो इस प्रकाश को खिड़की से बाहर की तरफ मुँह करके गीत गा रहा है। जंगल को गीत सुना रहा है।

तुम्हारे इस उत्साह ने मन पर ऐसी छाप छोड़ी कि मोरंगे का एक अंक लोकगीतों पर ही निकालने की ठान ली। आज यह अंक तुम्हारे सामने है। तुम इसे पढ़ ही रहे हो।

तुम्हारे
मोरंगे

लोक वाद्य –'घेरा'

उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा के बच्चे पद गायन प्रस्तुत करते हुए

खा गयो बिछूड़ौ

इस्याँ रै पगाँ को महल चुणायौ
महला म रम रयौ बीछूड़ौ

पप्पू की मम्मी पाणी नै चाली
आँगळी म खा गयौ बीछूड़ौ

पप्पू की मम्मी लाकड़ी नै चाली
लाकड़ी म खा गयौ बीछूड़ौ

पप्पू की मम्मी बाड़ा म चाली
बाड़ा म खा गयौ बीछूड़ौ

पप्पू की मम्मी सोवण चाली
सोती नै खा गयौ बीछूड़ौ

प्रस्तुति–
मैना गुप्ता, शिक्षिका, कटार–फरिया

लख बिणजारो

लख बिणजारौ रे म्हारौ मोती बिणजारौ
लख बिणजारौ रे म्हारौ मोती बिणजारौ
ओछी सी ओछी सी गोड्याँ को म्हारो लख बिणजारौ
लख बिणजारौ म्हारौ लख बिणजारौ

लख बिणजारौ रे म्हारौ मोती बिणजारौ
बाखड़ली बाखड़ली मूछ्याँ को म्हारौ लख बिणजारौ
लख बिणजारौ म्हारौ लख बिणजारो

अरी कहीं म्हारौ लख बिणजारौ देख्यौ के ?
हाँ, देख्यौ न। अरी खाँ देख्यौ ?
चाय की दुकान पै

चाय भी चाय भी पीवे छै थारौ लख बिणजारौ
बाखड़ली, बाखड़ली मूछ्याँ को थारौ लख बिणजारौ
लख बिणजारौ म्हारौ मोती बिणजारौ

अरी कहीं म्हारौ लख बिणजारौ देख्यौ के ?
हाँ, देख्यौ न अरी खाँ देख्यौ ?
अरी खळी बेचतौ देख्यौ

खळी भी, खळी भी बेचै छै थारौ लख बिणजारौ
बाखड़ली, बाखड़ली मूछ्याँ को थारौ लख बिणजारौ
लख बिणजारौ म्हारौ मोती बिणजारौ

अरी कहीं म्हारौ लख बिणजारौ देख्यौ के ?
हाँ, देख्यौ न अरी खाँ देख्यौ ?
अरी गेरू बेचतौ देख्यौ

गेरू भी बेचै छै थारौ लख बिणजारौ
बाखड़ली, बाखड़ली मूछ्याँ को थारौ लख बिणजारौ
लख बिणजारौ म्हारौ मोती बिणजारौ

प्रस्तुति–
राजकृंता,किरण,पूजा,सावित्री,उगंता,कविता,
नीतू,पूजा, मनभर, रोशन, कटार–फरिया

बतियाँ ही बतियाँ

हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै
बाजरा का खेत मांइ पाडौ चरै

दौराणी जेठाणी म्हारी नींदाणी पै चाली
वो तो घणी रे लड़ी रे बतियाँ ही बतियाँ
जेठ जी के खेत मांइ पाडौ चरै
हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै

दौराणी–जेठाणी म्हारी मेड़ा मांइ चाली
वो तो घणी रे लड़ी चोट्याँ ही चोट्याँ
जेठ जी के खेत मांइ पाडौ चरै
हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै

दौराणी–जेठाणी म्हारी कजला सारै
वो तो घणी रे लड़ी अँखियाँ ही अँखियाँ
जेठ जी के खेत मांइ पाड़ौ चरै
हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै

दौराणी जेठाणी म्हारी लकड़ी नै चाली
वो तो घणी रे लड़ी रे लकळयाँ ही लकळयाँ
जेठ जी के खेत मांइ पाडौ चरै
हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै

दौराणी–जेठाणी म्हारी खेताँ मांइ चाली
वो तो घणी रे लड़ी रे कमर्याँ ही कमर्याँ
जेठ जी के खेत मांइ पाडौ चरै
हेलौ पाड़ री पप्पूड़ी थारा दादा नै

प्रस्तुति–
राजेश कुमावत, शिक्षक, बोदल

लोक नाट्य –'कन्हैया'

जोड़ी राम लखन की

जोड़ी राम लखन की आई रै
मिल लै रै केवटिया

आगे–आगे राम चलत है
पीछै लछमण भाई
बीच–बीच म चलै जानकी
लछमण की भौजाई
जोड़ी राम लखन की आई रै
मिल लै रै केवटिया

झरमर–झरमर मेहा बरसै
पवन चलै परवाई
एक पेड़ कै नीचै भीजै
राम लखन दो भाई
जोड़ी राम लखन की आई रै
मिल लै रै केवटिया

नदी किनारे तीन वृक्ष है
पीपल आम बबूल
राम लखन सीता के पथ में
भारी कंकर धूल
जोड़ी राम लखन की आई रै
मिल लै रै केवटिया

प्रस्तुति–
अनूप मीणा, 11 साल, समूह सागर

होरी रे रसिया

आज बिरज म होरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया

उड़त गुलाल लाल भए बदरा
केसर रंग की होरी रे रसिया
होरी रे रसिया, बरजोरी रे रसिया

कै मन रंग गुलाल उड़े हैं
कै मन केसर घोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

नौ मन रंग गुलाल उड़े हैं,
दस मन केसर घोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

कौन गाँव के कृष्ण–कन्हाई
कौन गाँव की गोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

नंद गाँव के कृष्ण–कन्हाई
बरसाने की गोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

कौन के हाथ कनक पिचकारी
कौन के हाथ कमोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

कान्हा के हाथ कनक पिचकारी
राधा के हाथ कमोरी रे रसिया
आज बिरज म होरी रे रसिया

प्रस्तुति–
दिनेश शुक्ला
शिक्षक, कटार–फरिया

किलोल में लोकनृत्य प्रस्तुत करती शिक्षिकाएँ

लाँगुरिया

बढ़गौ–बढ़गौ री तेल को भाव लाँगुरिया
चूल्हे पै कळैया कोई मत रखियो

मेरे ससुर गये तीरथ करने को
मेरी सास पुआ कर खाय लाँगुरिया
चूल्हे पै कळैया कोई मत रखियो

मेरे जेठ गये तीरथ करने को
मेरी जेठानी पुआ कर खाय लाँगुरिया
चूल्हे पै कळैया कोई मत रखियो

मेरे देवर गये तीरथ करने को
मेरी दौरानी पुआ कर खाय लाँगुरिया
चूल्हे पै कळैया कोई मत रखियो

प्रस्तुति–
रेणू गुर्जर
शिक्षका, कटार–फरिया

लोक वाद्य –'नौबत'

पीतल की गागरी

पीतल की मोरी गागरी
दिल्ली से मैंने मोल मँगाई रे

अपना मुखड़ा नया लगा
हम जब–जब देखें पानी में
ओ हम जब–जब देखें पानी में
बदनामी हो गई गाँव में

सुनकर कोयल की आवाज़
हम जब–जब देखें पेड़ों पर
ओ हम जब–जब देखें पेड़ों पर
पगली सी होकर डोलूँ रे

गगरी में हम पानी भरके
जब–जब चलते राहों में
ओ हम जब–जब चलते राहों में
पैरो में छाले हो गये रे

पीतल की मोरी गागरी
दिल्ली से मैंने मोल मँगाई रे

प्रस्तुति–
नवीन अरोड़ा, शिक्षक, जगनपुरा

पद पार्टी लालारामपुरा गायक–मोती, भरोसी व अन्य

पूर्वी राजस्थान में लोकगीत

हमारा सवाई माधोपुर जिला पूर्वी राजस्थान में आता है। करौली, दौसा, अलवर, भरतपुर आदि पूर्वी राजस्थान के कुछ अन्य जिले हैं। मोरंगे के इस अंक में हमने कोशिश की है कि पूर्वी राजस्थान के इन जिलों में प्रचलित लोकगीतों के कुछेक रूपों की थोड़ी सी झलक हमें मिले। जिन लोकगीतों को हम खूब गाते रहते हैं उनके बारे में हमारी जानकारी थोड़ी और बढ़ जाए।

नहळा मेवात (अलवर) में गाए जाते हैं। नहळा गूजर और मीणा जातियों के बीच खास तौर से प्रचलित है। पहले एक पंक्ति बोली जाती है, जैसे–'सामली तबारी र तोमै कूकरा लळै।' फिर समूह के बाकी लोग एक साथ गाते हैं–'हम्बै कूकरा लळै।' फिर आगे सारे गाते हैं–'म्हारी फूटगी चलम बूढ़ा डोकरा लळै।'

ब्रज की होली सारे देश में विख्यात है। ब्रज का अधिकांश क्षेत्र उत्तरप्रदेश राज्य में पड़ता है। राजस्थान का भरतपुर जिला ब्रज क्षेत्र में आता है। इस क्षेत्र के एक सुपरिचित

ब्रज–रसिया 'आज बिरज म होरी रे रसिया' की होली के दिन बड़ी धूम रहती है।

ख्याल शादी–ब्याहों में बन्ने गा लिए जाने के बाद नाचकूद करने और धमैया मचाने के लिए गाए जाते हैं। जिनमें हँसी–मजाक के लिए भरपूर मसाला होता है। जैसे–'हकीम ताराचंद मेरी नबजई नीं जानैं।'

लाँगुरिया का नाम आते ही कैलादेवी और करौली अपने आप ही दिमाग में घूम जाते हैं। जो लाँगुरिया के बारे में कुछ भी नहीं जानते वे भी इतना जरूर जानते हैं कि 'चरखी चल रही बर कै नीचै, रस पी जा लाँगुरिया।'

ढाँचा पचवारा (लालसोट) क्षेत्र का लोकप्रिय गायन है। पचवारा और ढाँचा एक दूसरे के पर्याय हैं। पचवारा में ही ढाँचाओं का जन्म और विकास हुआ है। अपनी मारक धुन और बोलों की वजह से यह दौसा, जयपुर, सवाई माधोपुर, करौली आदि जिलों में मेलों, तीज–त्यौहारों पर भरपूर गाए जाते हैं। दो पंक्तियों के ढाँचा को पदों की तरह बढ़ाकर इनके माध्यम से पौराणिक कथाएँ भी गाई जाती हैं–

म्हारी सासूजी लड़ैगी कान्हा छोड मटकी
जल भरबा नै जावै छी, गैला म डटगी।

अरी जसोदा मात जोड़ूँ दोनूँ हाथ अरज सुन मेरी
हम कब तक बिपदा सहैं बिरज की चेरी
मारग म बैठ्यौ पावै नित नई–नई धूम मचावै
वे हमकू नहीं सुहावै, सब ग्वाल–बाल बहकावै
आज पीछै मैया तेरे घर नहीं आऊँगी
पकड़ कै चोटी याकू कंस कै ले जाऊँगी
जायकै हवाल सारा सजा सुणवाऊँगी
रस्सी से बँधवाकै यामैं मार लगवाऊँगी

मार–मार कर दिया कर दिया घनश्यामा
तुम सुणौ जसोदा मात गूजरी देने लगी ताना रै
थारा कान्हा जसोदा नींका राख ढंग सूँ
सरसोना की जावण्याँ नै ढोड़ै पग सूँ।

एक होते हैं, एक पंक्ति के गीत। इन्हें कुछ लोग बण्डा–गीत बोलते हैं, कुछ कुदकन्ना कह देते हैं। इन गीतों की खासियत यह है कि यह दुनिया की सबसे नन्हीं कविताएँ हैं। जापानी हाइकू से भी छोटी। एक पंक्ति में कविता पूरी हो जाती है। जैसे–'मत रोवै री कळीली कूळौ जान में गियौ।' कहना यह कि कळीली रोओ नहीं कूड़ा (चूल्हे का ईंधन)

बारात में गया है, आ जाएगा।

रसिया यूँ तो कई तरह के होते हैं और कई तरह से, कई लहजों में गाए जाते हैं। इस अंक में शामिल किए गए रसिया इधर गूजरों के बीच बहुत प्रचलित हैं। और कभी–कभी इनमें कितनी सुंदर कविता होती है देखिए कि–'पतली भाभी पतली रोटी पौवे रे। रोटी कै भरोसै देवर कागज खागौ रसिया।' भाभी इतनी पतली रोटियाँ बनाती हैं कि रोटी खाने बैठा देवर कागज को रोटी समझ कर खा गया।

तुमने शहरों में कपड़ों की बड़ी–बड़ी दुकानों में आदमी औरत के बुतों (मॉडल,पुतले) को कपड़ों में सजे हुए जरूर देखा होगा। कभी–कभी तो भ्रम हो जाता है कि ये औरत इतनी सजी हुई बेचारी कितनी देर से खड़ी है। इस दृश्य को देखकर लिखा गया यह रसिया देखें कि,'गंगापुर में नई–नई फैशन चल गई रे, कागज को मोट्यार मसालो मैडम बण गई रसिया।'

देवी–देवताओं को अपने गीतों के केन्द्र में रखकर रचना करने वाले अनाम लोक–लेखक, लेखिकाएं भी यह जानते हैं कि यह तो सच है कि इनसे माँगने से कुछ मिलता नहीं है। कि देवी–देवता एक तरह के लोक–विश्वास जिसके भरोसे वे अपने दुखों को कुछ समय के लिए भूल जाते हैं। बाकी तो वे उन्हें परम्परा से प्राप्त हुए इन दैवीय प्रतीकों का अपनी बात कहने के लिए इस्तेमाल करते हैं। इन्हें माध्यम बनाकर, इन पर ढाड़ कर, वे अपने जीवन के सुख–दुखों की रचना करते हैं। इन रचनाओं में जीवन के सारगर्भित विवरण हमें मिलते हैं। तुलसी की कवितावली और कबीर की बानियों की तरह हमारे जीवन में इन लोक–रचनाओं का गहरा सामाजिक महत्व है।

'कुण नै रे कूटी गौराँ कुण नै रे मारी
कुण नै रे घर बाहर काड़ी छी
सासू नै कूटी, जेठाणी नै मारी
बाई सा नै घर बाहर काडी छी।'

तो इस गीत में दो स्त्रियों की परस्पर बातचीत है। जिसमें एक स्त्री को दुखी,व्यथित और उदास देखकर दूसरी उसके दुख के बारे में जानना चाह रही है कि, गौरा तुम्हें किसने पीटा, किसने मारा, किसने घर से बाहर निकाला। तो वह स्त्री अपनी इस सहृदया को बता रही है कि मुझे सास और जेठानी ने मिलकर पीटा और ननद ने घर से बाहर निकाल दिया। असल में जिन लोकगीतों के हम गाने का आस्वाद ही ले पाते हैं उनमें कही गई बातों पर उन बातों के अर्थ पर गौर करना चाहिए ताकि हम अपने जीवन में उनकी उपयोगिता सही मायनों में समझ सकें।

राम के आदेश से सीता को वन में छोड़ आने को लेकर लक्ष्मण इतनी दुविधा में, इन

लोक रचनाओं में ही मिलते हैं, जब वे कहते हैं–'माई बरोबर भाभी नै किंया छोड़ूँ वन म/मूँ तौ जळ जातौ लंका म/कामी फंसतौ ई फंदा म।' कि माँ जैसी भाभी को कैसे जंगल में छोड़ कर आऊँ ? अच्छा रहता मैं लंका के युद्ध में ही मर जाता, इस फंदे में तो नहीं फँसना पड़ता।'

करौली जिले के जगरौटी अंचल के 'पदों' ने आज की तारीख में राज्य की सीमाओं से बाहर दूसरे हिन्दी राज्यों तक अपनी पहचान बना ली है। इस इलाके में पूरे बरस पद दंगलों की धूम मची रहती है। बच्चों ने मोरंगे के इस अंक के लिए जो पद भेजे उनमें चालीस में से तीस सुरबंदा लोक कवि धवले के थे। ऐसा होना स्वाभाविक भी था। असल में पद–गायन के साठ–सत्तर साल के अतीत में लगभग चालीस साल गायक धवले को गाते हुए हो गए हैं। उन्होंने ही पद–गायकी को स्थापित किया। और राज्य से बाहर अपनी प्रस्तुतियों से इस गायन–शैली को ख्याति दिलाई। उनके सौ से अधिक ऑडियो कैसेट जारी हो चुके हैं। इस इलाके में चलने वाले हर तीसरे–चौथे ट्रक या ट्रैक्टर पर उनके पद बजते हुए सुने जा सकते हैं। उनके बिना कोई पद–दंगल पूरा नहीं होता है। उनकी अनुपस्थिति भी पद–दंगलों में उपस्थितों से अधिक चर्चित रहती है। हमें लगा कि बच्चे उनके सुरबंदाओं को तो गुनगुनाते ही रहते हैं। लेकिन वे यह भी जानें कि कोई पद केवल एक सुरबंदा भर नहीं होता है, वह एक पूरा आख्यान होता है, जिसमें कथा वाले हिस्से के साथ घुलमिलकर ही, कविता या गायकी वाला हिस्सा अपना पूरा रंग, पूरा असर छोड़ पाता है। अतः इस अंक में हमने धवले के एक पूरे पद को कुछ संपादित करते हुए प्रकाशित किया है। असल में पद को ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जाता तो मोरंगे का यह अंक उससे ही पूरा भर जाता। बच्चों ने अपने जिस प्रिय लोक गायक का नाम ही सुना है या कभी दंगलों में देखा होगा उनके बारे में कुछ और जान सकें, समझ सकें, इसके लिए इस लोककवि से की गई एक लम्बी बातचीत के कुछ अंश भी इस अंक में शामिल किए हैं।

गणगौर के अवसर पर हर साल भरने वाले हेला–ख्याल दंगल की ऐसी ख्याति है कि नेशनल ही नहीं तमाम टीवी चैनल उन दिनों वहाँ आ झुकते हैं जब यह आयोजन होता है। हिण्डौन के समीप एकोरासी गाँव कीर्तन दंगलों के लिए विख्यात है यहाँ राजस्थान के अलावा यूपी तक की कीर्तन पार्टियाँ दंगल में भाग लेने आती हैं। इधर हरीराम गूजर का नाम ढोला गाने के लिए चर्चित रहा है।

इधर के लोकगीतों के ये बहुत थोड़े से वे रूप हैं जिनकी प्रस्तुतियाँ बच्चों ने इस अंक में की हैं। इनके अलावा ढोला, जिकरी, कन्हैया, ठड्डा, सुड्डा, हेला–ख्याल, महिला राम–रसिया, कीर्तन, गोठ इत्यादि लोकगीतों के कितने ही रंग, कितनी ही ध्वनियाँ हैं जो इस भूमि की मिट्टी में अपनी मिठास घोले हुए है।

नहळा

1
बोलल्यौ बतळाल्यौ, मन को मेट ल्यो धोकौ
कुणकै कुण आवै मिलबा नै, कैयाँवाणी लागगौ मोकौ।

2
नई घड़ाई दाँतळी, कोल्याळो बाटूँगी
मेरा बाबुल का खेताँ म लुळ–लुळ घास काटूँगी।

3
सामली तिबारी तोमै कूकरा लळै
म्हारी फूटगी चिलम, बूढ़ा डोकरा लळै।

4
पीपळा का खोकरा में पाणी कौ मटको
आछ्यो लागे रे बूडळिया थारी नाड़ को लटकौ।

5
जनक की सभा म रावण आँपकी दड़ै
चाल्यौ धनुष उठाबा रावण, दबकी आँगळी तळै।

6
मेघनाद सा पुत्र दीखै बाती–बाती म
कैंया झेल लियो रे रावण अगनि बाण छाती म।

7
लक्ष्मण जी के बाण लाग्यौ सामैं छाती म
भारौ रोयो रे भगवान आडौ लेर गोदी म।

8
गढ़ गोकुल की गुजर्या नै छानैसी बोलै
कान्हू बणगो रे मणिहारो चूड़ी बेचतो डोलै।

प्रस्तुति–
वेणी प्रसाद शर्मा, शिक्षक, बोदल

ढाँचा

1
लौण तेल पतकाळी भाभी होग्यौ छै मँहगौ
चाँदी–सोना कै बराबर टेरीकोट कौ लँहगौ।

2
पुआ न्ह तौ पापळी जरूर करती
म्हारी जणबाळी होती तौ माथै हाथ धरती।

3
सात समंदर, कूद बंदर लंका म आयौ
म्होंडौ मत मोळै सीता जी थारी बेइ मूँदळी लायौ।

4
जैपुर कै पैलाळी म्हारौ सासरौ होतौ
मुँ तौ बिन्या टिकिट चल जाती संग म्हारौ बालमौ होतौ।

5
धौळा–धौळा बैल ज्याँकै सोना की जूळी
छोरी थारा सासरा का आगा लाँबी तोळ लै पूळी।

6
हाथ म रूमाल मूँडौ पूँछतौ डोलै
म्हारा बैल तियासा मरग्या जंगल देखतौ डोलै।

7
लाल–लाल लूगळी र चारूँ कूंणा फूल
बगल में बेल बीच म नांव बता री कुण सो दोस टीटी कौ।

8
डूँगर म सूँ छेळी उतरी धार काडूँगी
म्हारौ जेठ गयौ नारौली कुण की लाज काडूँगी।

9
धोळा–धौळा दाँत घसग्या मंजन करबा सूँ
थारी लाल लूगळी घसगी लाँबी लाज करबा सूँ।

10
कदकौ काड्यौ बैर पराई कतरी सी काया
काका माटी म मला दी म्हारी फूल सी काया।

11
आगा सूँ तौ ड्राईवर झाँकै पाछा सूँ टीटी
ऐ रै थारी माई सूँ मिलै तौ मिललै इंजन दे रियो सीटी।

प्रस्तुति–
बनवारी लाल मीणा, राजिन्दर माली, दिलराज, अटल मीणा, बीना मीणा, झील समूह
मनराज मीणा, विक्रम मीणा, श्रीमोहन मीणा,चौथमल सैनी, रामहरी सैनी, समूह–सागर

एक पंक्ति के गीत

1 मत रौवै री कळीली कूळौ जान म गियौ।

2 अंटी मत खेलै पढ़बाड़ा, घंटी बाज बाड़ी छै।

3 दादो को आयौ खेताँ सूँ झालर बाज बाड़ी छै।

4 रोटी काँई म करूँ म्हारा परण्या,कळली नै कागलो लेगौ।

5 काळौ–काळौ रे काजळियो, टीकी लाल रंग की।

6 मूँ तौ बाद घणी पसताई रे मलग्यौ राबड़ी खाणौ।

7 तोरण मार्‌या पाछै ठीक पळयौ लाडा की मोटी नाक।

8 काळा–काळा रे बराती लाडौ धूप–छाया कौ।

9 लाडौ तोरण पै छँड आयौ जम का दूत की जीयाँ।

10 नीचै लुळ जा रे हजारा मैडम फूल तोळैगी।

11 धौळी कार खड़ी गैला म बाई जी का पाँवणा आया।

12 सासू माँड पसारौ बैठगी मावा की थाळी म।

13 दोनूँ भुआ–भतीजी नाचै डगमग डागळौ हालै।

14 डीजे बाजे छोर्‌याँ नाचै बनड़ी की शादी में

15 कान्हौ बैठ्‌यौ–बैठ्‌यौ डाड़ पै बजावै बनसी।

प्रस्तुति–
बीना मीणा, समूह–झील, पूजा मीणा, राजकुमार, इन्द्रधनुष, चौथमल सैनी, रामहरी सैनी, मनराज मीणा, मनराज मीणा, कर्मा, नरेशी, प्रियंका, रीना, प्रमिला, हस्तीमल मीणा, श्रीमोहन मीणा, समूह सागर, फोर सिंह मीणा और रामघणी मीणा, जगनपुरा,रामसिया बाई, समूह–गुलशन, बोदल, अर्चना, आरती, योगेश, प्रवीण, कटार–फरिया

रसिया

1
हाँ हाँ रे पतली भाभी पतली रोटी पोवै रे
रोटी कै भरोसै देवर कागज खागौ रसिया।
2
हाँ हाँ रे गंगापुर म नई–नई फैशन चल रही रे
कागज को मोट्यार, मसालो मैडम बण गई रसिया।
3
हाँ हाँ रे गंगापुर में चांदी मँहगी हो गई रे
बेचैंगा कळूल्या छोरी म्हारी नरस बणैगी रसिया।
4
हाँ हाँ रे अटा की छोरी पैंट जीन्स को फैरै रे
हाथ म रूमाल बजरिया म पिच्चर देखै रसिया।
5
हाँ हाँ रे गुर्जर भाई आरक्षण म जावै रे
कर दियो चको जाम पुलिस की मानई कोनी रसिया
6
पप्पी तेरे पापा नै बुलालै रे
हो गए रोटी साग सकाळा को भूको डोलै रसिया।
7
ऊँचा टीला पै इसकूल पढ़ाई नहीं चालै रे
पीपड़ की छांया नींद गजब की आवै रसिया।
8
अरेरेरे मैंनै रात सुण्या समचार, लुगायाँ बतळावै
पप्पू की जीजी पालो–कूटी खावै रसिया।

प्रस्तुति–
चौथमल सैनी, रामहरी सैनी, विक्रम सिंह मीणा, समूह–सागर,
बृजेश गुर्जर, समूह–फूल
रामघणी रसाल मीणा,समूह–झील **बरमा मीणा, मनोज सैनी**,समूह–इन्द्रधनुष

1 डिस्को की साड़ी पे दिल मेरा
दिला देते तो क्या होता ?

मेरे ससुर बड़े खोटे
जली रोटी मुझे देते
मेरी सास बड़ी अच्छी
कभी लड्डू कभी पेळा

मेरे जेठ बड़े खोटे
जली रोटी मुझे देते
मेरी जेठानी बड़ी अच्छी
कभी बर्फी कभी पेळा
प्रस्तुति–**मोनिका शर्मा**, शिक्षिका,बोदल

2 **इंग्लिश पढ़ी लिखी**

मैं इंग्लिश की पढ़ी लिखी
मेरी शकल बिगड़ गयी मम्मी जी।

सास कहे बहू झाड़ू लगा,
मैंने झाड़ू लगाया मम्मी जी।
मैं इंग्लिश की ...

सास कहे बहू रोटी बना,
मैंने रोटी बनाई मम्मी जी।
मैं इंग्लिश की ...

सास कहे बहू पानी खींच,
मैंने पानी खींचा मम्मी जी।
मैं इंग्लिश की ...

सास कहे बहू बर्तन माँज
मैंने बर्तन माँजे मम्मी जी।
मैं इंग्लिश की ...

सास कहे बहू कपड़े धो,
मैंने कपड़े धोये मम्मी जी।
मैं इंग्लिश की कृ
प्रस्तुति–**श्यामा चौधरी,** शिक्षिका, बोदल

3

राम मैं पीहर की प्यारी

मेरी सास बड़ी खिलहारी
राम मैं पीहर की प्यारी

सास नै ढाई सेर मक्का दे दयी
मैने सारी रात पीस्यौ
सास ने मोटौ चून बतायौ
राम मैं पीहर की प्यारी

सास नै मोटौ चून बतायौ
मैने चंढ मंगरै बरसायौ
सास नै बेटो जाय जगायौ
राम मैं पीहर की प्यारी

सास नै बेटो जाय जगायौ
बेटो फूलन डंडी लायौ
बेटो फूलन डंडी लायो
वानै फूलन डंडी मारी
राम, मैं पीहर की प्यारी

वानै फूलन डंडी मारी
मैं तो ओढ़ रजइया सो गई
सास ने हलवा जाय बणायौ
राम मैं पीहर की प्यारी

सास ने हलवा जाय बणायो
वानै उँगली से चटकायो
उँगली डाड के नीचे आ गई
राम मैं पीहर की प्यारी

प्रस्तुति–
भारती शर्मा, शिक्षिका, बोदल

देवी–देवताओं के गीत

राम कथा

1
बीच म काँई–काँई कडग्या रे

ओ जेन्दे बाबा
बन्दराबन म कथा बचै
आंपा सुणबा चालां रे

ओ जेन्दे बाबा
सुणती नै आगी मोनै नींद
बीच म काँई–काँई कडग्या रे

गूजरी कडग्या री लछमण राम
बीच म सीता जी कडगी रै

प्रस्तुति–
लाखन्ती, 11 वर्ष, झील

2
दो मोटर दो कार

बालाजी दो मोटर दो कार
सड़क पै क्यों र खड़ी छै रे
बालाजी सीता कै हुयौ नंदलाल
जामणौ देर खड़ी छै रै
बालाजी सीता कै लोठौ परिवार
मंदर म समायौ कोनी रै
तोमै सकती बताई हनुमान
मंदरिया नै थोड़ौ सौ बढा दै रे

प्रस्तुति–
कर्मा, नरेशी, प्रियंका, रीना, प्रमिला, समूह सागर

3

हल्लो–हल्लो टेलिफोन

हल्लो–हल्लो टेलिफोन बजरंग बालाजी
कौण नै कर्‌यौ छौ,कुण कू मिलायौ, कौण नै उठायौ
हल्लो–हल्लो टेलिफोन बजरंग बालाजी
राम नै कर्‌यौ छौ, लछमण नै उठायौ,
सीता नै करी दो बात बजरंग बालाजी
बालाजी बनी म गाय चरै रै पाछी मोड़ ल्या रै
लछमण देवरिया मोड़ ल्या
म्हारी छेळयां जळ की तीरां म दौड़–दौड़ मारी
वा भी लिख ल्या रै धोळा कागज म
प्रस्तुति–**आरती**, 12 वर्ष, समूह–झील

4

मूँ तौ जळ जातौ लंका म

लछमण बेगा सा र रथ जोड़ौ
सीता जी नै छोड़ौ जी वन म भईया
माई बरोबर भाभी नै किंया छोडू वन म
मूँ तौ जळ जातौ लंका म
कामी फंसतौ ई फंदा म
प्रस्तुति–**लाखन्ती**, 11 वर्ष, झील

5

विपता म भगवान

मात–पिता परमातमा भैया मिलै न दूजी बार
जिसने दुखाई आतमा वो डूबत है मँझधार

नैया पार करा दै केवटिया विपता म भगवान
विपता म भगवान आज थारै आँगण राजा राम

कैसे कराऊँ नैया पार कहाँ उतारूँ जार
कौन देस से आए हो तुम कहाँ जाओगे उस पार

नैया पार करा दै केवटिया विपता म भगवान
विपता म भगवान आज थारै आँगण राजा राम
प्रस्तुति–**चौथमल सैनी, रामहरी सैनी,** समूह–सागर

चौथ माता

1

डूँगर पे मंदर मते चुणा

म्हारी चौथ मैया ऊँचा हि डूँगर पे मंदर मते चुणा।
म्हारी चौथ मैया आवैगौ हिलोड़ मंदिर पड़ै जावेगौ।
म्हारी चौथ मैया ऊँचा हि डूँगर पे मंदर मते चुणा।
म्हारी चौथ मैया आवैगौ बरबूळयो डागळौ टूट जावेगौ।
म्हारी चौथ मैया ऊँचा हि डूँगर पे मंदर मते चुणा।
म्हारी चौथ मैया आवैगौ मेव मंदिर भैए जावेगौ।

प्रस्तुति–
दशरथ नायक, उम्र–13, समूह–गुलशन

2

हरकी–हरकी आई री तोनैं ढोकबा री म्हारी चौथ भवानी
नीचै सूँ ढोकू तो मंदर दूर पड़ै री म्हारी चौथ भवानी
ऊपर सूँ ढोकू तो दिल म्हारौ धड़कै छै री म्हारी चौथ भवानी
अबकै तौ झुला द्यूँ हरियौ पालणौ री म्हारी चौथ भवानी

3

म्हारी चौथ भवानी सासू जी नै बोली मारी बाँजळी
म्हारी चौथ भवानी सुसरा न्यौं बोलै और लिया
म्हारी चौथ भवानी जेठजी न्यौं बोलै न राखूँ फेराळी
म्हारी चौथ भवानी क तौ ले लै म्हारी जान
क तौ मनै बालौ दे दै री।

4

म्हारी चौथ भवानी गई छी बाग म
सुसरौ तौ म्हारौ झाँक्यौ ही कोनी
म्हारी चौथ भवानी गई छी आँगण म
सासू तौ म्हारी बोली ही कोनी
म्हारी चौथ भवानी गई छी महला म
पियौ तो म्हारौ बोल्यौ ही कोनी
म्हारी चौथ भवानी
अब तौ झुला दै हरियौ पालणौ

प्रस्तुति–
रामघणी मीणा, 12 साल, समूह–झील

5

बचन म्हारी माय जी

हैमा लूगड़ी म लिख लाई नाम
बचन म्हारी माय जी
थारा मंदरिया कै फरगी चारूँ मेर
बचन म्हारी माय जी
माई जी म्हारी गोदी म कौनै नंदलाल
दे दै न म्हारी माय जी
गूजरी दिलळा म थावस राख
झूला द्यूँ हरिया पालणा

प्रस्तुति–
सीमा मीणा, 11 साल, झील

कुण नै रे कूटी गौराँ कुण नै रे मारी

कुण नै रे कूटी गौराँ कुण नै रे मारी
कुण नै रे घर बाहर काडी छी
सासू नै मारी, जेठाणी नै काडी
बाई सा नै घर बाहर काडी छी

सासू सूँ उलटी मत चालै री
जठाणी सूँ न्यारी हो जा ज्यौ
जयुपर जाज्यौ चूँदळ लाज्यौ
बाई सा नै सासरै खंदावैंगा

प्रस्तुति–
बीना मीणा, 12 वर्ष, समूह–झील

क बैठूँ रेल म

रेल तौ पटरी पै चालै मोटर चालै सळकाँ पै
म्हारा रामधणी को पालणौ रूणिजा म चालै रे
क बैठूँ रेल म।

रेल तौ बिजली सूँ चालै मोटर चालै डीजल सूँ
म्हारा रामधणी कौ पालणौ हवा सूँ चालै रे
क बैठूँ रेल म

रेल तो टेसण पै डटगी
मोटर डटगी अड्डा पै
म्हारा रामधणी को पालणौ रूणिजा म डटग्यौ रे
क बैठूँ रेल म

प्रस्तुति–
कर्मा, नरेशी, प्रियंका, रीना, प्रमिला, समूह सागर

नाटक में नगाड़ा

लख बिणजारौ गीत पर नृत्य प्रस्तुत करती कटार–फरिया शाला की बालिका

नरसी जी कौ भात

हाँ जी देखिए अब आप सुनेंगे नैहनी बाई रो मायरो। सज्जनो, गुजरात में कहते हैं मायरा और हमारे यहाँ राजस्थान में, ढूँढाड़ी भाषा में भात कहते हैं। बंधुओ, नरसी गुजरात प्रांत के जूनागढ़ नगर के रहने वाले थे। जाति से बणिया थे। ये चार भाई थे। उनके एक लड़की थी। जिसका नाम था नैहनीबाई। दूसरा उपनाम था–रामाबाई। जिसकी सुसराल गुजरात प्रांत के सरसागढ़ शहर में थी। नैहनी बाई के ससुर का नाम था मनसा सेठ। नैहनीबाई के पति का नाम था रंगजी। और नैहनीबाई के देवर का नाम था–नाराण्या। बंधुओ, नैहनीबाई के एक लड़की थी। जब वह शादी के योग्य हो गई तो उसकी शादी की तैयारियाँ होने लगी। जब दो–चार दिन शादी के रह जाते है। नैहनी बाई अपनी सासू से निवेदन करती है–'मैं पिता के यहाँ जाकर भात का निमंत्रण दे आऊँ–

'सुणौ सासूजी मेरी, जो अज्ञा पाऊँ तेरी
तो मैं पीहर कू जाऊँ
और जूनागढ़ दरम्यान भात बाबुल कै घर नौत्याऊँ'

सासू मना करती है–'नैहनी बाई तू बहुत बड़े घर की बहू है। जब तेरी शादी हुई थी, तब तेरा बाप नरसी हमारी बराबरी का जोड़ीदार सेठ था। अब वो सब धन को लुटा करके और बाबाजी बन गया। वो ऐसा बेशरम है कि बाबाजियों की मंडली लेकर हमारे घर आ जाएगा। शादी में जो रिश्तेदार इकट्ठे होंगे, बाबाजी को देखकर हमारी हँसी करेंगे। तेरा तो बाप लगता है, पर उस बाबाजी को देखकर हमको बहुत नीचा देखना पड़ेगा। एक पण्डित जी के द्वारा निमंत्रण लिखकर चिट्ठी भिजवा देंगे। उस निमंत्रण में भी इतना माल लिखेंगे कि तेरे बाप के पास न तो इतना माल होगा, ना वो यहाँ आएगा और औपचारिकता पूरी हो जाएगी। देखिए नैहनी बाई से सासू जी किस तरह से मना करती है–

हाँ री तेरौ बाबुल बैरागी भातैया बण आवैगौ
म्हारी पौड़ी पै बाबाजी लारै लावैगौ।

रामाबाई कह रही सास मैं जाऊँ
सादी के दिन दो–चार भात नौत्याऊँ
सुनकर के इतनी बात सास न्यौं बोली
पीहर जाबे की बता जबाँ क्यों खोली ?
वानै सब धन दियौ लुटाय बच्यौ नहीं बाकी
रे गई बात बिंगड़ सारी नरसी मेहता की
का देगौ भात भतैया, ऊ झालर शंख बजैया
मत जावै रामाबाई, तू बड़े घरन की ब्ह्याई
एक कागद कलम मँगाऔ, पाती लिख दूत पठाऔ

वामैं लिख द्यौ सारौ हाल, अनोखौ माल संग म लइयौ
नहीं तौ नरसी सरसागढ़ कू मत अइयौ
द्वात कलम कागद लिया लेखक लिया बुलाय
और नरसी जी कौ भात की सो पाती दई लिखाय
तेरौ बाबुल बैरागी भातैया बण आवैगौ
म्हारी पौड़ी पै बाबाजी लारै लावैगौ।

बंघुओ, नैहनी बाई के सास–ससुर, देवर जेठ सब परिवार इकट्ठा हो गया। देखिए सब मिलकर भात का निमंत्रण किस तरह से लिखवा रहे हैं–

प्रथम पत्रिका म लिख्यौ जूनागढ़ सरनाम
नरसी समधी को लिखी मनसा सेठ सलाम
तेल लिख्यौ मण्डप लिख्यौ लिखी ब्ह्याव की बात
सरसागढ़ म साह जी तुम लेकर आज्यौ भात
सवा पचिस मण लिख्यौ कलायौ, सवा पचिस मण रोड़ी
सवा पचिस मण हड़दी लिख देओ, दस मेवा की बोरी
लिखो थान जड़ी का पाँच सौ, साल दुसाला कापड़ा
साठ बेस सौ चूँदड़ लिख द्यौ, अस्सी लहँगा भाँकड़ा
सुमरन का आभूषण लिख द्यौ क्रोड़ रुपैया रोकड़ी
कागज म दो भाटा लिख द्यौ न्यौं उठ बोली डोकरी
हम से भूल रही कछु रही बाकी वाकू भी संग म लाज्यौ
इतनी सरदा न्ह होवै तो म्हारै बावणैं मत आज्यौ
पाँच पंच जूनागढ़ के और भाई बंध संग लाज्यौ
संत महातमा बाबाजिन कू लारै लेकै मत आज्यौ
तू भी पहन दुलंगी धोती, लाल पागड़ी बांध्याज्यौ
झालर शंख चीमटा तूमा तू भी लारै मत लाज्यौ
अब हँस–हँस कै रहीअ लिखाय भात की पाती
रामाबाई की भभक रही है छाती
वो ठाडी घूँघट काड भरै दृग आँसू
मेरे बाबुल की निंदरा करै ससुर और सासू
बाबुल के घर म आज दीखती थैली
मोकू ले जाते संग जोड़ते भैली
समै बिंगड़ गई बाप की सो कौण बंधावै धीर
और नैहनी बाई के है नहीं सो कोई जामणजायौ बीर
क जामण जायौ होतौ तो सबर कर लेती
पौड़ी पै मन भर लेती।

पत्रिका को लेकर बंधुओ पण्डित जी जूनागढ़ में आ जाते हैं और पूछते हैं–'यहाँ कोई नरसी नाम का सेठ रहता है ?' किसी ने बताया, नरसी के कुटुम्बियों ने, व्यंग्यात्मक लहजे में,–'भैया यहाँ नरसी नाम का सेठ कोई नहीं रहता। एक नरसी नाम का बाबाजी जरूर रहता है।' पण्डित जी बोले–'बताओ भैया कहाँ मिलेगा ?' बताया–'वो साधुओं की मण्डली के बीच में करताल लेकर जो नाच रहा है, वही नरसी बाबाजी है।' पण्डित जी ने जाकर देखा, विचार किया–'हमारे सेठ जी कह रहे थे वो सही है। ये तो खरा बाबाजी है। ये भात कहाँ से देगा ?लेकिन आया हूँ तो निमंत्रण तो देना है।' बोले–'जी नरसी आप हैं ?' बोले–'भैया क्या काम है ?' कहने लगे–'तुम्हारी नवासी की शादी है। भात का निमंत्रण लेकर आया हूँ।' पत्रिका को लिया। खोलकर के पढ़ा। पढ़कर के समझ गए। समधी ने मुझे निर्धन बाबाजी समझकर मेरा मजाक उड़ाया है। लेकिन कोई बात नहीं। पण्डित जी से कहने लगे–'पण्डित जी भोजन करके जाना।' पण्डितजी ने सोचा, पैदल दूर से आया हूँ और पैदल जाना है। बाबाजी के टिक्कड़ खा चलें। भूख भी लगी है।'

नरसी विचार करते हैं। चलो भाईयों के पास चलते हैं, समधी ने कहा वैसा कर लेते हैं। नरसी के भाईबंध पहले से ही नरसी की बुराई कर रहे थे। देखिए, क्या होता है–

'नरसी भगत घूमतौ आयौ, आकै भाईन से बतड़ायौ
तड़कै भात भरैंगा भाई
तुम हो जाज्यौ तैयार बाट देखैगी रामाबाई'

बंधुओ, नरसी अपने भाई बंधुओ के पास गया। भाईयों ने मना कर दिया–'तुम तो बेशरम बाबाजी हो। तू तो साधु है। तेरा क्या बिंगड़ने वाला है। हम लोग इज़्ज़तदार हैं। तेरे पास धन है नहीं। साथ ले जाकर के हमको नीचा दिखाएगा।' बोले–'भैया चलो या मत चलो। मैं तो जा रहा हूँ।' बोले–'चला जा।' नरसी अपने घर आ गया। विचार करने लगा–'समधी ने अपने हिसाब से भाई बंधों के लिए लिख दिया। भाई बंध बिना धन के चलते नहीं। धन अपने पास है नहीं। हम तो अपने हिसाब से चलेंगे। हम तो ऐसे भाईयों को ले चलेंगे, जो बिना धन के हमारे साथ चलें।

अब ये नाट गए फटकार संग म भाईबंद नहीं आए
संत महातमा जूनागढ़ के सब नरसी नै बुलवाए
पाड़ौसी कै घर जाके एक माँग लई टूटी गाड़ी
बूढ़ी बदिया बँधी खिरक म पकड़ पूँछ कीन्ही ठाडी
हो गयौ तैयार जोड़ दी गाड़ी
संत महातमा भेड़े हो गए लटकै लम्बी डाडी
कोई–कोई है छोटी गोडी कौ, कोई–कोई सुलपसट्ट लोडी सौ
कोई संत चीमटा वाड़ौ, कोई तन से कतई उघाड़ौ
खा–खा चून पड़े वे सण्डा, जाणैं गोबरधन के पण्डा
जय जयकारे उड़ते जावैं
और साधु भौत पुरानी गाड़ी चरड़–मरड़ चुँचावै

कहीं–कहीं गैल अनोखी आवै, बूढ़ी बदिया जोर लगावै
जब साधुन की गिर ज्याय तूमी, फिर गाड़ी कू कर दे ऊँबी
फिर बरबर म तूमा गुड़कै
और बदिया बैठ ज्याय जब साधु गाड़ी म से ढुकड़ैं
अब आगै पड़ गई रेत भई दोनों बदिया ठाडी
और नीचै गिर गए संत टूट गई नरसी की गाड़ी रे
ओ नरसी की गाड़ी भूडा म बबर गई आरौ फँसगौ रे
साधु संतन कू सरसागढ़ भारौ पड़गौ रे।

गाड़ी टूट गई। साधु लोग नीचे गिर गए। मिट्टी में गंदे हो गए। कहने लगे नरसी से महाराज हम तो पहली बार गाड़ी में बैठे हैं। हमसे गाड़ी चलाना नहीं आता। और गाड़ी खराब हो गई तो ठीक करना भी नहीं आता। माँग के गाड़ी लाए हैं, टूट गई। अब सरसागढ़ बहुत दूर है। पैदल नहीं चला जाता। कैसे पहुँचेंगे ?नरसी कहने लगे–'तुम चिन्ता मत करौ। तुम तो अपना काम चालू करो।' साधु कहने लगे–'हमारा क्या काम है ?गाड़ी टूट गई तो खड़े हैं।' गाड़ी को कौन ठीक करेगा ?' नरसी ने कहा–'जो भात भरेगा, वही गाड़ी ठीक करेगा। गाड़ी को ठीक नहीं करेगा तो भात कैसे भर देगा ?'

हाँ जी ये बीच गैल म नरसी की गाड़ी को आरौ फँसगौ
और धरनी म धुर ज्याय टिकी जब भूडा म पहिया फँसगौ
भाज्यौ आयौ कृष्णा खाती, आरौ ठोक लगा दई पाती
गाड़ी पाणी सा म तैरै, जाणैं नई छँडायी जोड़ी
बादी भी सलपट्टा मारै, जैसै है नागौरी घोड़ी
पौंचे सरसागढ़ म जाई,
और देख हाल भातैई कौ न्यौं बतड़ावैं लोग लुगाई
रामा कौ भातैया आयौ, लारै संत महातमा लायौ
बिनकै लटकै लम्बी डाडी, डूँडा बैल पुराणी गाडी
नीचै उतर चौक म ऊँबा
एक हाथ म शंख चीमटा एक हाथ म तूमा
दुनिया हँस रही दे–दे गाळी
और आयौ एक खवास बता दई नरसी को खिरकाड़ी
किसी ने जाके कह दिया मनसा सेठ से कि तुम्हारा भातैई आ गया है। सोचा मनसा सेठ ने–'पत्रिका में लिखा था। भाई बंधों को लाना। बाबाजी मत लाना। दोनों का विलोम करके लाया है। ना भाईयों को लाया, ना साधु आए। ये तो अकेला ही है।' लोग कहने लगे–'अजी अकेला नहीं है। मण्डली तो पूरी है। लेकिन देखो तो मिट्टी में गंदे हो रहे हैं। ऐसे लग रहे हैं मानो कोई भूतों की टोली है।' मनसा सेठ ने नाई को भेजा–'दौड़ के जा। घर पै मत आणे दे। यहाँ सब रिश्तेदार बैठे हैं। हमारी मजाक करेंगे। उनको ऐसी जगह बिठा जहाँ किसी को पता नहीं चले।' नाई ने कहा–'सेठ जी कहाँ रुकाऊँ ?'

बोले–'हमारी गैया बँध रही है। तू वहाँ उस बाड़े में घुसा दे सबको।' नाई गया और नरसी से कहा–'ये तुम्हारे रहने का स्थान है।' अंदर बाड़े में गए। गैयाओं ने लात मारी। साधु कहने लगे–'महाराज ये कैसा स्वागत हो रहा है ?' नरसी ने कहा–'तुम बाबाजी हो। तुम कभी भात में तो गए नहीं। जिनके पास पैसा नहीं होता है, बिना पैसे के भातैई तो पशु के बराबर होते हैं। तुम तो अपना काम चालू करो। अपना क्या काम ? बोले वही काम। कीर्तन चालू करो। कीर्तन चालू हुआ। झालर, मृदंग, शंखों की घनघोर सुनकर के गाय तुड़ा, तुड़ा करके भाग गई। बाड़ा खाली हो गया। नरसी ने कहा–'अब बहुत फुर्सत हो गई। अब आराम से बैठो। समधी अपने आप ढूँढ लेंगे।'

इधर, बंधुओ नैहनी बाई को मालूम हुआ। मेरे बाप के साथ मेरे ससुर ने ऐसा बरताव किया। लेकिन निर्धन बाप की बेटी बिचारी कर भी क्या सके ?मौका पाकर के नरसी के पास जाती है और कहती है, मेरे देवर–जेठ, मेरे सब कुटुम की पड़ोसिनें मेरे से मजाक करती हैं। मेरा देवर नाराण्या मुझे मोढ्या की, भिखारी की लड़की कहकर पुकारता है। क्या कहती है, नैहनी बाई नरसी से–

हाँ रै बाबुल मैं तौ नाराण्या नै मोढ्या की बताई रे
भरी आई मेरी छाती उमक्याई रे।

नरसी की रामा सुता ऐकली आई रे बाबुल से ऐसे रोय–रोय बतड़ाई
मोकू देख हँसै दौराणी, बोली मारै सब सेठाणी
ई का देवैगौ भात कुटम का बतड़ावै बाण्या
मोसूँ बाबाजी की छोरी खैवै देवर नाराण्या
बाबुल मैं तौ नाराण्या नै मोढ्या की बताई रे
भरी आई मेरी छाती उमक्याई रे।

सज्जनो, नैहनी बाई की बात को सुनकर के नरसी कहने लगा–'रामा बेटी लाडली तू मत मन होय निराश। कि तू चिन्ता मत करे।' इधर मनसा सेठ ने नाई को बुलाया। कहने लगा–'वो भातैई सब मिट्टी में बिंगड़ रहे हैं,। उनको पानी पहुँचा दो और ये कह दो कि नहा–धोकर के, तिलक लगा के बैठें, वो कम से कम साधु जैसे तो लगें।'

सज्जनो, नाई ने अपनी घरवाली को भेज दिया–'पानी–पात का काम तुम कर दो। मैं शादी की मोटी व्यवस्थाओं में लगा हुआ हूँ।' नाई की घरवाली पानी लेके तो गई लेकिन इतना गरम पानी ले गई कि जो पानी में हाथ दे उसी के फफोला पड़ जाए। नरसी कहने लगा–'इतना गरम पानी क्यों लाई ?' कहने लगी–'जी हमारे सरसागढ़ में तो इतना ही गरम पानी निकलता है।'

भागी न्हांअ्ण सिदौ सी आई

और नरसी कू न्हाबे कै ताँई नीर गरम कर लाई
पड़ गए सब संतन कू लाले
जो जो हाथ नीर म देवै पड़े हाथ म छाले
अब काली पीली घूमरी घटा उठी घनघोर
पी पी पपिहा नै करी सो बोले दादुर मोर
चहुँ दिस अम्बर में भए बादल बेसुम्मार
राजी हो गए महातमा सो कोई बरस्यौ मूसलधार
बाबुल मैं तौ नाराण्या नै मोढ्या की बताई रे
भरी आई मेरी छाती उमक्याई रे।

'इधर सेठ मनसा नै सरसागढ़ म दियौ बुलायौ
न्हाअ्ण सुशीला नै पौड़ी कै आगै चौक पुरायौ
और नाई के नै तुरत भाज चौड़े म फरस बिछायौ'
फरस बिछ गई। चौक पुर गया। और नरसी को आवाज लगा रहे हैं–'समधी आओ। भात का काम चालू करो।' साधु लोग कहने लगे–'महाराज समधी आवाज लगा रहा है। चलें फरस पर बैठें।' नरसी ने कहा–'जनम के बाबाजी हो, कभी गृहस्थियों के काम नहीं देखे। फरस पर बैठकर तू भात में देवेगा क्या ? तुम्हारे पास झालर, शंख, चीमटा के सिवा कुछ है ही नहीं। तुम तो अपना काम करो। समधी के शादी है वो अपना काम कर रहे हैं। बोले–अपना क्या काम शेष बचा है, भात देने ही तो आए हैं ?' बोला–'भात में देगा क्या ? अब तुम्हारी पिटाई का नम्बर आने वाला है। भात में देने को कुछ नहीं है। यहाँ नगर इक्ठा होने लग गया।

बंधुओ, उधर श्रीकृष्ण रुक्मणि से कहने लगे, रुक्मणि नरसी छप्पन करोड़ के खजाने को लुटा करके और आज बिना पैसे के निर्धन बनके नवासी की शादी में सरसागढ़ भातैई बनके चला गया। अब तुम देर मत करो। आज मैं उन छप्पन करोड़ का चार गुना करके बदला चुकाऊँगा।

संग लेकै सारौ माल बन्यौ भातैया गोपाल
चल दियौ ततकाल रथ म रुक्मणि बिठाय
लगै ऊँचौ–ऊँचौ पेट धोवती की मार फैंट
शीश पागड़ी लपेट कलम कान म लगाय

चमकता हुआ रथ सरसागढ़ के नजदीक पहुँचा। लोगों ने सोने से मँढा हुआ रथ पहली बार देखा। नजदीक जाकर के पूछा 'आप रथ में विराजमान कौन हैं ?' कहने लगे–'मैं तो नरसी सेठ का गुमाश्ता हूँ। लोग आश्चर्य से पूछने लगे–'ओह, आप नरसी सेठ के मुनीम हैं। आपका रथ सोने का है। नरसी तो बाबाजी बताए ?' बोले–'भैया सेठ जी ने जैसा सोने

का दे रक्खा है, उसमें बैठकर के घूमता फिरता हूँ।' लोग कहने लगे जिनके मुनीम का ऐसा ठाठ है वो सेठ कैसे होंगे ?अभी लोग कह रहे थे नरसी तो बाबाजियों की मण्डली लेकर आया है। कोई चलते–फिरते बाबाजियों को बता दिया। भातैई तो अब आए है। रथ को देखकर और लोग लुगाई सरसागढ़ के एक–दूसरे से क्या कहने लगे–?

हाँ री आजा भाभी भाग्या भातैई आगौ रामाबाई कौ
ई ब्याई लागै, ई समधी लागै म्हारा नाराण्या की माई कौ।

भर–भर के छकड़ा मालन के सरसागढ़ म आए
रामाबाई कै साँवलिया भातैया बन आए
चारों खूँट लगा दई बाड़, नहीं थानन की कोई सम्हाड़
इतकू पड़्या माल का ढेर, संग म भंडारी कुम्मेर
बता म्हा कसर कौणसी रहवै
और पौड़ी आगै बैठ मुरारी नाराण्या से खैवै
तुमनै लिखी भात की पाती, अब बुलवालै सातों जाति
जो पाती म माल लिखायौ
तू मन की ठसक भजा लै मैं वासू भी दूणौ लायौ
पैलै सेठ हमारौ आयौ वाकू पाणी तक नहीं पायौ
तुमनैं जाण्यौ कोरौ नंगा
तू अब तौ सरबत पातौ डोलै देख हमारौ ढंगा
जब तक आ गई पौड़ पै तो ई सरसागढ़ की नार
कोकिल बैनी सुंदरी सो वे गावैं मंगलाचार।
आजा भाभी भाग्या भातैई आगौ रामाबाई कौ
समधी लागै म्हारा नाराण्या की माई कौ।

सज्जनो, नैहनी बाई अपने भातैई को देखकर के अपने आपको भूल गई कि मैं लाडी की माँ हूँ और नंगे पैरों झूम उठी और नाई की घरवाली से कहने लगी–'तू तो पैला पाड़ा में बुलाया। ये मेरे पड़ौस में रहने वाली हैं इनको तो मैं खुद बुलाऊँगी। ये मेरे से रोज–रोज ताना मारती थी कि बाबाजी की छोरी कै कौण भातैइ आएगा। मैं इनसे जाके कहूँगी मेरे भातैई को देखो, न तुम्हारे अब तक ऐसा भातैई आया और न आएगा। तो किस तरह से नैहनी बाई खुशी से आवाज लगा रही हैं, अपने पड़ोस में जाकर के–

अरे नैहनी बाई खैबा लागी मैं तो आगी या ल्यौ
और भात फैरबा को भाएली बेगी–बेगी चालौ
म्हारी गुलबत्ती गुलकंदी गैंदी गुल्लोरी गुलबाई
कमला केसन्ती किस्तूरी कन्चौ कलाबती सुकबाई
धापा पाछा सूँ बिल्लायी मेरा राम

आज मोसूँ भारी बणी
छोरौ छोड़्याई अकेलौ वा तौ रावैगौ लड़गौ म्हारौ घर को घणी
ये रामा की पौड़ी पै सरसागढ़ की दुनिया आई
संत महातमा बैठे, ठाडे हो गए कृष्ण–कन्हाई
नणदी झेड़ बाँध कै लाई, वाकू पाँच म्होर पकड़ाई
मन म राजी होती आई, पाछै चुड़कंदी फैराई
कोरी कट्ट लूगड़ी बिननै लाडी कू उडवाई
सज्जनो, इस तरह से जिसको जो वस्तु चाहिए वो सब अच्छी तरह सबको दई। सबको प्रसन्न कर दिया। नैहनी बाई बहुत प्रसन्न हो रही थी। अब उनके निजि परिवार के सदस्य रह गए। कहने लगी नैहनी बाई, भैया साँवलिया, या नणद नै मोसे कमी नहीं छोड़ी। ये मेरे से रोज कहती थी बाबाजी की छोरी के कुण भातैई आयगौ। नैहनी बाई की नणद अपनी सहेलियों के साथ छज्जे पर भात के गीत गा रही थी। नैहनी बाई उसको किस तरह से बुलाती है–

हाँ हाँ रे बाईजी नीचै उतर्या छाजौ टूट पड़ैगौ रे
छाजौ टूटगौ शादी म बिघन मचैगौ।

अब रह गयौ मनसा कौ परिवार सुणल्यौ आगा का समचार
नणदी भात ओढ़बा आई, रामाबाई न्यौं बतड़ाई
साँवलिया भैया सुण लीज्यौ
या नणदुलिया कू आज गेंदड़ी सी बीरा मंड दीज्यौ
लँहगा दे दियौ झल्लर वाड़ौ, जे म लग्यौ रेशमी नाड़ौ
घैणौ सुमरन कौ फैरायौ,
जोधपुरी चूँदड़ म दादुर मोर मंडा कै लायौ
मोहन मंद–मंद मुसकावै
रामा की नणदी से साँवरिया ऐसे बतड़ावै
अब तौ ठाडी भीगी–भीगी
तू लम्बो कर दै हाथ घिता द्यूँ तोकू काजड़ टीकी
बाईजी नीचै उतर्या छाजौ टूट पड़ैगौ रे
छाजौ टूटगौ शादी म बिघन मचैगौ।

नैहनीबाई नणद की शिकायत करके इस तरह से भात पहनवाती है। फिर कहती है भैया मैंने इसके लिए इसलिए कहा था कि ये रोज ताने मारती थी। क्या कहती थी–

हाँ रै नणद भाभी बाबाजी की छोरी खै बतड़ावै रे
बाबुल निरधन है भातैया कुण आवै रे।

अब नम्बर नाराण्या कौ आगौ
पाँचौं कपड़े सिले सिलाए वाकू भातैइ लायौ
फिर नम्बर सेठाणी कौ आयौ
साठ कली को सुँआ घाघरौ वाकू भातैइ लायौ
ऊपर नीचै से फैरायी
नरसी बोल्यौ समधण तैनैं पाती खूब लिखाई
कलायौ दस कुंटल मँगवायौ
मैं भी भर–भर बोरी लायौ याकू कणिया कै लटकालै
दस कुंटल रोड़ी का तू माथा कै तिलक लगालै
तैंनै लिखवायी दो भ्आट
मैं दो–दो मण सोना चाँदी की लायौ बिनकू ड्आट
कैसे ठाडी समधण न्होड़ी, तू तो करलै भरलै झोड़ी
नरसी हुयौ बगल म ऊँबौ
और कछु कम रह तो समधण ले जा मेरौ तूमौ
पाछै मनसा सेठ बुलायौ
लाल पागड़ी बँधा दइ कुड़ता धौड़ौ फहरायौ
पाछै रामाबाई आई
दियौ जड़ी को बेस सुनहरा तारन सूँ मँडवायी
रामा नै झोड़ी कर लइअ
रामा की झोड़ी भातैइ नै म्होरन सूँ भर दइअ
अरे दियौ जोर कौ भात हो रही घर–घर सल्ला सी
लाडी का बाप कू लायौ रे धोवती पीड़ा पल्ला की।
नणद भाभी बाबाजी की छोरी खै बतड़ावै रे
बाबुल निरधन है भातैया कुण आवै रे।

बुलायौ भंडारी कुम्मेर, करौ मत भैया पल की देर
या नगरी की ममता भरद्यौ
और सरसागढ़ कै ऊपर तुम सुमरन की बरसा करद्यौ
आज तलक दियौ नहीं तो नरसी जैसौ भात
सुमरन की बरसा करी तो न्ह्याल भई गुजरात
आछी करनी कर मरौ अमर रहैगी बात
जैसे जग में अमर स कोई नरसी जी कौ भात।
पीड़ी फड़िया काचन की म्हारी सासू कू उडा दीज्यौ
लीला लँहगा म भातैया मोर मंडा दीज्यौ।

धवले मीना, गांव–लालाराम पुरा, तहसील–हिण्डौन, जिला–करौली, राजस्थान

इस पद की रिकॉर्डिंग 29 मार्च 2009 को कोटा में आयोजित पद–दंगल में की गई।

लोक नाट्य –'कन्हैया' प्रस्तुत करते कलाकार इस लोकनाट्य में सौ से डेढ़ सौ की संख्या में गायक शामिल होते हैं और एक स्वर में गाते हैं

पद पार्टी शेखपुरा के गायक नाहरसिंह व झण्डु व बीच में नर्तक

लोक कवि–गायक धवले से बातचीत

लोककवि धवले से यह बातचीत उनके गाँव में, उनके घर पर, इन्हीं जाड़ों में रिकॉर्ड की गई है। चित्रकार मदन कोटा से कैमरे और रिकॉर्डर लेकर रवाना हुए। सवाई माधोपुर से यह नाचीज़ उनके साथ हुआ। रौंसी से आए कहानीकार चरणसिंह पथिक श्रीमहावीर जी स्टेशन पर मोटरसाईकिल लेकर तैयार मिले। गाँव के अनगढ़ कथाकार ने डामर रोड का आसान रास्ता नहीं पकड़ा। और कच्चे में कई किलोमीटर हमें भटभेड़े खिलाते हुए ले गए। नरसी की गाड़ी के संत महातमाओं की जैसी यात्रा हमें करवायी। ''जब साधुन की गिर ज्याय तूमी,फिर गाड़ी कू कर दे ऊँबी।'' खेतों के डोड़ौं पर मिलने वाले किसानों से रास्ते पूछते हुए हम गायक धवले के गाँव पहुँचे। गाँव में धवले अपने संगतकार मोती के घर बैठे मिले। हमें देखते ही खड़े हुए और हाथ मिलाकर हमें अपने घर ले गए। घर के बरामदे में बिछी खाट पर हमें बैठाया। जब हमारे लिए वहाँ चाय–पानी की व्यवस्था हो रही थी मुझे धवले की ये पंक्तियाँ याद आ रही थी–'बोल्यौ भगत विप्र मत भाजौ, जैसौ घर में रूखौ–सूखौ भोजन करके जाज्यौ।' हम अजनबियों को देखकर राह चलते किसान भी धवले के बरामदे में आ बैठे। बरामदा भर गया। कवि धवले की माँ भी बरामदे में जमीन पर एक ओर आकर बैठ गईं। उनका बेटा मुकेश जो दंगल में उनके संगतकार की हैसियत से गाता है और बेटे की माँ भी वहाँ उपस्थित थी। धवले ने अब हम तीनों को एक साथ सम्बोधित किया–'तो आज ये तीन तित्त कैसे भेड़ी हुई ?' हमने कहा बस चले आए आपसे मिलने, बातचीत करने। सुबह दस बजे से चार बजे तक हम उनके घर रुके। खाना खाया। लोगों से बातचीत की। एक घण्टे की एक लम्बी रिकॉर्डिंग की। बातचीत की उस रिकॉर्डिंग के बहुत थोड़े से अंश प्रस्तुत यहाँ प्रस्तुत हैं।

प्रभात : आपके गाए हुए पद हम बरसों से सुन रहे हैं। कैसेट से भी आपके पद सुने हैं और दंगलों में भी आपको सुना है। हम आपसे जानना चाहते हैं कि आप कितने अरसे से गा रहे हैं और कब से पद–गायन की यह परम्परा चल रही है ?

धवले : परम्परा तो काफी दिन पहले से है, हमारे बुजुर्ग गाते थे इसको। एक बार होली के दिन गा रहे थे वो। मुझे एक लाईब्रेरी से किताब मिली–'सनेहीराम की लीला।' जब मैं कक्षा चार में पढ़ता था। जिसमें कृष्ण की बारहमासी की धुन में पूरी तरह कृष्ण के चरित्र की कविता थी। उसको गा रहे थे वो। वो कैसे शब्दों में गा रहे थे ? कुछ ऐसे–
'जेल में जनमे हो मुरारी, बेड़ी तो वानै सबरी हो तोराड़ी।'
इस तरह से गा रहे थे। उसमें कुछ बोल लगाए थे उन्होंने। बुजुर्गों ने बीच में ही वो बोल एक–एक, दो–दो बार देके छोड़ दिए। मैंने कही और बोलो इसमें कुछ। बुजुर्गों ने कही हमको तो याद नहीं है। तू कैसे जानता है ?मुझे उस किताब की वजह से कुछ और बोल भी याद थे। मैंने वो बोले। बोले तो कच्ची आवाज थी। अच्छा लगा उन्हें। बुजुर्ग बोले–'तू यार शुरू से गा दुबारा इसी गीत को।' दुबारा गवाया। उनको अच्छा लगा। बोले–'वा यार।' फिर वे लोग एक और गीत के बोल देकर बोले–'या गीतअ गा तू।' मैंने गाया तो बोले–'वा यार।' फिर तो कोई भी गीत गाते वो मुझे याद कराते और बोलते–'याय तू तेरी आवाज में ही सीख।' तब मेरी उम्र थी ग्यारह वर्ष।''

प्रभात : धवले जी आप राजस्थान के सुदूर देहात में रहते हैं। और एक ऐसी भाषा में गाते हैं जो दो–तीन जिलों के सीमित क्षेत्र तक ही प्रचलित है फिर यह कैसे सम्भव हुआ कि आप राजस्थान, गुजरात, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि राज्यों तक गाने जाते हैं ?

धवले : करौली में एक प्रोग्राम हुआ था। मध्यप्रदेश के लोग वहाँ आए थे, वे उसको देख गए। फिर मुझको मध्यप्रदेश में बुला लिया। सबलगढ़ में देखा भोपाल वालों ने तो उन्होंने भोपाल बुला लिया। बाकी ई ढोल (पद दंगल में बजाया जाने वाला घेरा) को सहारौ ऐसौ है कि ये जो इतनी आवाज करके देता है तो प्रचार और प्रसारण अपने आप ही हो जाता है।

मोती : एक किलोमीटर तक तो ई (घेरा) वैसे ही बुलालेअ् आदमीन नै।

प्रभात : धवले जी आप मूलतः लोक गायक हैं। पर आपको शास्त्रीय संगीत का भी ज्ञान है। तो ये आपको कहाँ से मिला ?

धवले : देखिए मैं कक्षा 4 का विद्यार्थी हूँ। स्कूल में कक्षा 4 तक ही पढ़ा हूँ। लेकिन मैं कुछ–कुछ हल्की इंग्लिश भी पढ़ लेता हूँ। ये कैसे पढ़ा ?और मैं संस्कृत का उच्चारण आसानी से कर लेता हूँ। ये कैसे हुआ ? तो जिस चीज में आदमी की लगन होती है। उसमें वो ऑटोमैटिक ही आगे बढ़ता रहता है। पद गाने के हिसाब से मेरी संगीत की तरफ तो रुचि बढ़ ही गई थी। शास्त्रीय संगीत भी जहाँ होता है, चाहे उसको कोई श्रोता मिले या न मिले लेकिन मैं उसको

जाकर आज भी सुनता हूँ।

प्रभात : वही हम जानना चाहते हैं कि आप कहाँ जाकर सुनते हैं ?शास्त्रीय संगीत से आपका परिचय ही कैसे हुआ ?

धवले : रेडियो में भी शास्त्रीय संगीत आता है। और इस क्षेत्र में भी कई गायक हैं। शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता, किसी का नाम सुनता तो उसके पास जाता, उससे बात करता। हिण्डौन में एक पूरणमल मास्टर है। वो शास्त्रीय संगीत को जानता है। उसके पास मैं आज भी जाता हूँ तो दो घण्टे देता हूँ। और पूछता हूँ, साब फलाँ राग कौनसा होता है ?ये राग कब गाया जाता है ?हालाँकि मैं उसको गाने में काम में नहीं लेता लेकिन मैं उसको जानता हूँ। थोड़ा–थोड़ा जानता हूँ। पूरी तरह से तो नहीं।

चरणसिंह : मैं ये पूछना चाह रहा हूँ कि धीरे–धीरे पदों का व्यवसायीकरण कब से हुआ ?

धवले : व्यवासयीकरण मतलब कैसिट–वैसिट कब से शुरू हुई ?ये ऐसे हुआ कि पहले हम माइक से नहीं गाते थे। चाहे पाँच हजार पब्लिक हो। चाहे दो हजार हो। पार्टी एक जगह बैठ जाती। कोई स्टेज नहीं बनती थी। नीचे जमीन पर बैठकर के उसको पब्लिक के चारों तरफ निकलके गीत गाते थे। जब ही अच्छे गाने वालों का पता चलता था। किसकी आवाज में दम है। उस टाइम हमारी पार्टी फेमस थी। जब हमारा गीत हमारे पास रहता था। क्योंकि मशीन के द्वारा नहीं सुनाया जाता था। करौली में सबसे फर्स्ट माइक लगा था। तो उसमें क्या है कि वो माइक वाले ने कैसिट भर ली। एक दिनां हिण्डौन में कुछ लोग कहने लगे, यार तेरी कैसिट बिक रही है। लोग तेरी कैसिट माँगते हैं। अब जिसने वो कैसिट भरी थी। उस दूकान पै मैं गया। ट्रक चलाता था मैं। गाड़ी चौराहे पर खड़ी की मैंने। तहमद लगरौ मेरै। ड्राइवर रोल मऔ। मैंनै कही दूकान वाले से–'तुमनै जिस प्रोग्राम की कैसिट भरी है, उनमें बढिया कैसिट कौनसी है, उसको देना।' मैंने कही, देखें मेरी बताता है कि कोई और की। बानै कही–'सबसे बढ़िया धवले की है।' मैंने कही–'कौन–कौन सी कैसिट ज्यादा बिक रही है ?' बोला–'मुझे पता नहीं।' ऊ रेडियो ठीक कर रौ। मेरी तरफ झूँक्यौ नही ऊ। बोला–'मुझे पता नहीं दिमाग खर्च मत करै। कौनसी चाहिए, माँगै जो दे दउँगौ।' मैनैं वाकौ पकड़ म्होंडो र न्यौं कर्‌यौ। मैंने कही–'मेरी तरफ देख। गीत गाया मैंनै। कविता करी मैंनै। पैसे कमा रहा है तू ?और मेरे से कह रहा है–दिमाग खर्च करने की जरूरत नहीं है।' अब वो हाथ जोड़ के बोला–'अरे उस्ताद मोकू तो पतो नइयौ की तू ही माँग रौ है।' मैंनै कही–'ई तो गलत बात है।' इसलिए अब जब माइक चालू हो गए। सब जगह माइक लग गए। माइक वाले सब जगह की कैसिट बनाकर बेच देते। मैंने सोचा–'तू पहले ही इसे कैसिट में भर के जबी क्यों नीं गावै। क्योंकि धंधा वो कर रहा है। इसलिए तू पहले कैसिट भर, फिर गा। अगर बिना कैसेट में भरे गा दिया तो कैसिट वाले ने कैच कर लिया और बाजार में बेच दिया। इसलिए मैंने कही जब तू गीत बनाय तो स्टेज पर जबी गा जब पहले कैसिट में देकै।

प्रभात : धवले जी आपका नरसी का भात एक ऐसा पद है, जिसे मैं बार–बार सुनता हूँ। नरसी जी की बेटी के दुख को और नरसी के जीवन को आपने जैसे व्यक्त किया है वह बहुत ही मार्मिक है। कैसे लिखा गया यह पद ?

धवले : देखिए जब मैं कोई काव्य करता हूँ तो उस दृश्य को मेरे दिमाग में घुमाता हूँ कि भात के टैम पै आज भी जिनके भाई नहीं होता वो बहन कैसा सोचती है। मैं पहले कल्पना करता हूँ कि ऐसा होता है जब कैसा होता है ? आज भी वो चीज मिलती है हमको। भात की टैम पै बहन क्या सोचती है। मेरे भाई होता .. .

चरण सिंह : आप विशेष क्षण में लिखते हैं या फिर चलते–फिरते ?

धवले : जैसे चार आदमी बैठे हैं कभी–कभी हल्का आपसे बोलता भी रहता हूँ और अपनी रचना भी करता रहता हूँ। अकेला भी घूमता–घूमता करता हूँ।

माँ : मैं न्यौं खैवैई–''धवले तू खाँ गयौ ?'' बोल्यौ–''डट जा।'' फिर आयौ। फिर कही–'अब पूछ लै।' मैंनैं कही–''जबकौ तू खाँ गयौ ?बोल्यौ–'पद जोड़ रौ।' ऐसै करै ई। ऐसै लिखै।

प्रभात : चलते–फिरते ही पद जोड़ते हैं उन्हें कहीं लिखते तो होंगे ?

माँ : घट (ह्रदय) म लिख लेवै। छोटौ सौ हौ ई छोटौ सौ। जब मैं कैवैई भैया कछु काम कर लै। कवैऔ कछु कर लऊँगौ। काम नीं कर्‌यौ। और ई काम कर्‌यौ। खैवैऔ–''आज म्हा बे गा रहे हैं। उननै देखबे जारोऊँ देखैऔ। सीखैऔ। ओजू न्ह्या आर छिरेटन नै भेड़ा करर न्ह्याँ गा लेवैऔ। छिरेटन नै लेर, क आपां पुरा पै गा आयं। कौनपुरा कू ले जावैऔ। कौनपुरा के भेड़े हो जावैए। ये भेड़े हो जावैए और गायावौ। ऐसै बढ़ती गा देवैऔ। अरे ई तौ भौत गाबे लग पर्‌यौ। पीछै और गाँवन म जाबे लग पळयौ। गाँवन से कागद आवैए पैलै। जब हींकै बढ़गौ।

धवले : पहले साधन नहीं थे। दो–दो तीन–तीन कोस घेरा माथे पै धर के पैदल जाते थे। दूर जाते थे तो हम खुद आंपकी गाड़ी करके लेके जाते थे।

मोती : शौक ही थी तब साब। फिर गाँव की प्रशंसा होने लग गई। फिर गाँव के लोग जुड़ते गए।

मुकेश : अब तौ जैसे प्रोग्राम करने जाते हैं। जैसे माधोपुर प्रोग्राम करने गए तो मार्शल लेके चले जाते हैं। रास्ते में समय मिलता है तीन घंटे का रास्ता है तो खिड़की पर उँगलियाँ चलती रहती हैं। और सोचते रहते हैं।

प्रभात : कौन–कौन से कवियों को ज्यादा पढ़ा है आपने ?

धवले : मेरै तो बढ़िया कवि कोई सौ भी आजा अड़ंगा म। वैसे तुलसीदास को सबसे ज्यादा स्थान देता हूँ मैं, शब्द ज्ञान के लिए।

मदन : आपकी संगत किन लोगों के साथ रही, जैसे ?

धवले : सतसंग की संगत को तो मैं चला के पकड़ता हूँ। जैसे शंकर भगवान कैलाश पर्वत छोड़कर, दक्षिण में कुम्भज ऋषि के आश्रम जाते थे।

प्रभात : कबीर की क्या बात आपको अच्छी लगती है ?

धवले : कबीर की मुझे सभी बात अच्छी लगती है। कबीर का हर उपदेश सटीक है।

कबीर कहते हैं संसार को पीछे देखो पहले अपने आप को देखो।

प्रभात : आपने कवि रत्नाकर, घनानंद वगैहरा को पढ़ा होगा ?कहीं–कहीं आपकी कविता का शिल्प उनके काफी नजदीक का है।

धवले : पद्माकर और थे न एक। पद्माकर कवि मुझे कितना अच्छा लगता है देखिए। झारेड़ा गाँव है एक। झारेड़ा म जा रे हम। मैं और ये (मोती) दोनों मोटर साइकिल पै जारे। एक आदमी नै कही कि ओ धवले आ हुक्का पी जा, हुक्का पी जा। हुक्का धरबे चलेगौ ऊ। ऊ हुक्का धररौ जब तक एक छोरा की छठी–सातवीं क्लास की किताब धरी। मैंनै एक पन्नौ खोल्यौ कविता ही वामैं। आठ पंक्ति गंगा के महिमा वर्णन की। उनको पढ़ता रहा। हुक्का पीता रहा। ये हुक्का पियै जब तक फिर पढ़ लूँ। ओजू हुक्का दुबारा आय जब तक फिर पढ़ लूँ। फिर पढ़कर के न्यौं (उलटी) मैंनैं धर दी। फिर ओजूँ म्हौं से बोलबे लगगौ। जे पंक्ति नी आय वाय फिर देखूँ। फिर बोलूँ। फिर ई (मोती) खै रौ कि का गुनगुना रौअ। मैंनैं कही आठ पंक्ति लियायौ। और उसका काव्य कितना सुंदर था। कैसौ अच्छ्यौ लग्यौ मौकू–(गाने लगे धवले)

कूरम पै कौल कील हू पै शेष कुण्डली है
शेष कुण्डली पै फबि फनन हजार की
कहै पद्माकर फनन पै फबि है भूमि
भूमि पै फबि है फबि रजत पहार की
रजत पहार पर शंभु सुर नायक हैं
शंभु पै शीश जटा ज्योति है अपार की
शंभु जटा–जूटन पै चंद्र की छूटि है छटा
चंद्र की छटान पै छुटि है गंगधार की
गंग के चरित्र लख भाख्यौ यमराज तब
ऐ रे चित्रगुप्त मेरे हुकम पै कान दै
कहै पद्माकर नरक सब मूँदि देऔ
मूँद सब द्वारन को तज यह थान दै
ऐसी भई देवसरि जाने कीन्हे देव सब
दूतन बुलाय के बिदा के बिधिपान दै
फार डारौ फरद न रोजनामा राखौ कहीं
खातौ खत जान दै बही कू बह जानै दै।

यामैं मेरी प्रशंसा मैं ही कर लेता हूँ कि मेरी याददाश्ती बहुत अच्छी है।

प्रभात : इसमें कोई संदेह नहीं कि आपकी याददाश्त चकित कर देने वाली है।

धवले : होली के दिन कलेक्ट्री में प्रोग्राम था। मंच का आदेश मिला, होली पर गाने का। दो पंक्ति मैंनैं गाते–गाते नै ही बणायी, फिर गाई कि

लीलौ रंग मत पटकै भाएली कान्हा काळा पै
पीळौ फबगौ बंसीवाळा पै।

चरणसिंह : अब भोजन अवकाश कर लें थोड़ौ सौ।

धवले : (हँसते हुए) तैनैं कही सही बात। इनकू तौ खोपरी पचाबाड़ौ चैयै।

उदय सामुदायिक पाठशाला,सवाईमाधोपुर की बालिकाओं की नृत्य प्रस्तुति